ज्ञान के भण्डार के लक्षण

(Features of Stock Knowledge)

शूट्ज की अवधारणा को जिसे हम हिन्दी में *ज्ञान का भण्डार* कहते हैं, उसे ही अंग्रेजी में *स्टोक नोलेज* (Stock Knowledge) कहते हैं। मस्तिष्क की चेतना मे जीव-जगत के बारे में जो भी जानकारियां हैं वे सब व्यक्ति के ज्ञान का भण्डार है जिसे वह दिन प्रतिदिन के व्यवहार में काम में लाता है। उदाहरण के लिये हमारा ज्ञान का भण्डार बताता है कि आज

किसी भी नौकरी के लिये गला काटने वाली प्रतियोगिता करनी पड़ती हैं, हमारा ज्ञान बताता है कि मंहगाई बहुत अधिक है, हमारी चेतना कहती है राजनीति का अपराधीकरण हो गया है, आदि। ये सब वस्तुएं जीव-जगत की है। और जीव जगत के बारे में हमारे मस्तिष्क और चेतना में जो कुछ है उसे शूट्ज ज्ञान का भण्डार कहते हैं। इसके लक्षण निम्न हैं :

1. मनुष्यों के लिये वास्तविकता वह है जो उनका ज्ञान का भण्डार है। समाज के सदस्यों के लिये ज्ञान का भण्डार *सर्वोच्च वास्तविकता* (Paramount Reality) है। यह वास्तविकता सभी सामाजिक घटनाओं को स्वरूप देती है, और नियंत्रित करती है। *कर्ता जब दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं तो इसी ज्ञान के भण्डार का प्रयोग वास्तविकता के रूप में काम में लाते हैं।*
2. यह ज्ञान का भण्डार लोगों में यह भावना पैदा करता है कि यही जीव-जगत की यानि दुनिया व समाज की वास्तविकता है। इस यथार्थ को व्यक्ति स्वीकृत मानकर अर्थात *टेकन फार ग्रान्टेड* (Taken for granted) चलता है। कोई भी व्यक्ति चेतन रूप से यह नहीं सोचता कि उसे अपनी क्रियाओं में इस ज्ञान के भण्डार को काम में लाना है। वास्तविकता तो यह है कि यह ज्ञान का भण्डार अचेतन रूप से बड़े ही सरल व सहज ढंग से उसके व्यवहार को नियमित करता है। जब हम अपने बुजुर्गों को देखते हैं तो चेतन होकर यह नहीं सोचते कि उन्हें मिलते ही अभिवादन करेंगे, उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखेंगे। इस क्षेत्र में हमारे ज्ञान का भण्डार बहुत स्पष्ट है : अपने से बड़ों का आदर करो और स्वाभाविक रूप से हमारा व्यवहार सम्मानीय बन जाता है।
3. ज्ञान का भण्डार सीखा जाता है, विरासत में मिलता है। यह जन्मजात नहीं मिलता। समान सामाजिक - सांस्कृतिक दुनिया में ज्ञान के भण्डार को समाजीकरण द्वारा सीखा जाता है। यही व्यवहार बाद में चलकर व्यक्ति का अपना हो जाता है।
4. जब मनुष्य ज्ञान के भण्डार की मान्यता को लेकर व्यवहार करता है तो इस तरह का पारस्परिक व्यवहार दूसरे लोग भी करते हैं। जो व्यक्ति हमारे साथ व्यवहार करता है उसे ज्ञात है कि हमारे ज्ञान का भण्डार क्या है। अभिवादन के लिये जब हम हाथ जोड़ते हैं तो सामने वाला व्यक्ति भी हाथ जोड़ता है। हम दोनों के जो ज्ञान का भण्डार है उसके दोनों ही भागीदार हैं। इसी कारण पारस्परिकता निभ जाती है।
5. *ज्ञान के भण्डार का अस्तित्व : समाजीकरण द्वारा इसे प्राप्त करना, तथा अन्तःक्रियाओं के लिये ज्ञान के भण्डार का पारस्परिक संदर्शों का आदान-प्रदान केवल समान ज्ञान के भण्डार के कारण है। अर्थात सभी कर्ताओं के लिये जीव-जगत या समाज एक समाज है। और इसी कारण क्रियाओं में समान व्यवहार मिलता है। समाज की एकता में बनाये रखने का कारण सबकी एक जैसे जीव-जगत में भागेदारी है।*
6. समाज बहुत वृहद् है। इसमें कई विभिन्नताएं हैं, कई विशेषताएं हैं। इन सबको विविध श्रेणियों (Types) में रखा जाता है। जैसी श्रेणी होगी वैसा ही व्यक्ति के व्यवहार का

अनुकूलन होगा। बम्बई महानगर है। इसमें कई विविधताएं हैं। एक पूरा समुदाय फिल्म उद्योग में हैं, एक समूह औद्योगिक है, इसी महानगर में ऐसे समूह भी है जो पूर्ण रूप से व्यावसायिक है। ये सब विशेषताएं श्रेणियां है। यहां के लोग इन सब श्रेणियों में अनुकूलन करके व्यवहार करते हैं। जटिल समाजों में जीव–जगत भी जटिल हो जाता है।

यदि हम शूट्ज के फीनोमिनोलॉजी समाजशास्त्र को देखें और विशेषकर जिस ज्ञान के भण्डार के लक्षणों का विवरण उन्होंने दिया है तो स्पष्ट हो जायेगा कि शूट्ज ने यूरोप की फीनोमिनोलॉजी और अमेरिका के अन्तःक्रियावाद का अच्छा सम्मिश्रण किया है। जब शूट्ज ज्ञान के भण्डार की चर्चा करते हैं, तो स्पष्ट रूप से वे हसरेल से प्रभावित हैं। हसरेल से उधार लेकर भी वे हसरेल की इस मान्यता को स्वीकार नहीं करते कि चेतना की प्रक्रियाएं जो व्यक्ति में होती है, का अमूर्तिकरण हो जाता है। हसरेल की इस असफलता पर ही शूट्ज अन्तर्वैयक्तिक निष्ठावाद की समस्या को एक मुद्दा बनाते हैं। इस विवाद के कारण ही शूट्ज पुनः हसरेल के जीव–जगत की व्याख्या करते हैं।

उपसंहार

हम बराबर आग्रह करते रहे हैं कि समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों का उद्देश्य समाज को समझना रहा है। *फीनोमिनोलॉजी* समाजशास्त्र चेतना, मस्तिष्क और जीव–जगत आदि अवधारणाओं द्वारा समाज की वास्तविकताओं का अध्ययन करता है। समाज वैज्ञानिकों के लिये मुख्य मुद्दा तो यह जानने का है कि हमारे इस समाज में *वास्तविकता* क्या है? किसे हम यथार्थ समझते हैं? और कौन केवल फरेब है? यथार्थता की यह व्याख्या *वृहद् समाजशास्त्री* (Macro Sociologists) और सूक्ष्म समाजशास्त्री (Micro Sociologists) दोनो करते हैं।

समाज वैज्ञानिकों के इन विवादों में शूट्ज का यह कहना है कि जीव–जगत के बारे में जो कुछ हमारी जानकारी है वह हमारे ज्ञान के भण्डार के अंग हैं। यह ज्ञान का भण्डार जो व्यक्ति के मस्तिष्क में हैं, समाजीकरण द्वारा प्राप्त होता है। जिसे मैक्स वेबर *वरस्टेहेन* कहते हैं, उसे शूट्ज व्यक्ति निष्ठावाद के पद द्वारा परिभाषित करते हैं। शूट्ज के लिये जो कुछ हमारा ज्ञान का भण्डार है वही समाज या दुनिया की यथार्थता या वास्तविकता है। जिसे मीड *सामान्यीकृत अन्य* (Generalised Other) कहते हैं, उसे शूट्ज ज्ञान का भण्डार कहते हैं। विशुद्ध रूप से शूट्ज का फीनोमिनोलॉजी समाजशास्त्र कई स्त्रोतों से धारणाओं को लेकर अपने आपको बनाता है। शूट्ज के विषय में यह सब लिखते हुए हमें याद रखना चाहिये कि उनके लेखन का बहुत बड़ा मुहावरा यथार्थता या वास्तविकता की खोज है। वे जानना चाहते हैं : आखिर जिन वस्तुओं का अस्तित्व है वह क्यों और कैसे है? शूट्ज ही क्यों हसरेल ने भी जिन सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक दशाओं में फीनोमिनोलॉजी को जन्म दिया, वे दशाएं ही कुछ ऐसी थी। हसरेल ने नाजीवाद के दमन को भोगा था। शूट्ज भी इसी के शिकार थे। सन्त्याना ने भी अमेरिका में [redacted]

सब राष्ट्रीय समस्याओं ने हसरेल और शूट्ज को यह जानने के लिये बाध्य कर दिया कि आखिर इस दुनिया में कौन से तत्व वास्तविक और यथार्थ हैं।

यद्यपि शूट्ज फीनोमिनोलॉजी समाजशास्त्र के विकास में अधिक कुछ नहीं कर पाये, यद्यपि शूट्ज हसरेल से आगे नहीं निकल पाये, यद्यपि शूट्ज फीनोमिनोलॉजी के किसी सिद्धान्त को नहीं बना पाये, फिर भी यह सत्य है कि उन्होंने एक सीमा एक फीनोमिनोलॉजी को नये क्षितिज दिये, कुछ नये तेवर दिये और यह उन्हीं के परिणामस्वरूप है कि हमारा सैद्धान्तिक संदर्श सुदृढ़ हुआ और इथनोमैडोलॉजी एक विशेष ज्ञान शाखा के रूप मे उभर कर हमारे सामने आयी।